परिशिष्ट 1

कुछ प्रचलित अवनद्ध लोक वाद्य

प्राचीन काल से भारतीय संस्कृति में संगीत कला का समावेश है। यह भी सर्वविदित है कि प्रत्येक प्रदेश विभिन्न तरह के संगीत से समृद्ध है। जिस तरह विभिन्न गायन शैलियाँ सुनने को मिलती हैं, उसी तरह वाद्य यंत्रों का एक विशाल संग्रह भी देखने एवं सुनने को मिलता है। वाद्य यंत्रों के मूल परिवारों के बारे में शोध करने से ज्ञात हुआ है कि प्राचीन मानव के रोज़मर्रा व्यवहार किए जाने वाले सामान से इसका जुड़ाव है। उन्हीं में से कुछ सुरीली वस्तुओं का चयन कर उन्हें सांगीतिक बनाया गया है। एस. कृष्णस्वामी ने अपनी पुस्तक *म्यूज़िकल इन्ट्रूमेन्ट्स ऑफ़ इंडिया* में लिखा है, "असल में मुख्यत: वाद्य यंत्रों की परंपरा एवं उनके परिवारों का निरीक्षण किया जाए तो ज्ञात होता है कि प्राचीन मनुष्य द्वारा हर दिन व्यवहार में लाए जाने वाली वस्तुओं में से जो उसके आवाज़ से भिन्न थी, परंतु उसमें से श्रुतिमधुर ध्वनि का निकास होता था वही वाद्य यंत्र के रूप में अपनाई गई।" आधुनिक युग में ऐसे ही वाद्य यंत्र सुनने को मिलते हैं।

आइए, भारत के कुछ प्रदेशों में बजाए जाने वाले अवनद्ध वाद्य यंत्रों के बारे में जानें।

अवनद्ध वाद्यों के बारे में मान्यता है कि लय मनुष्य जाति के साथ हमेशा जुड़ी है। इसीलिए जहाँ भी लयात्मक वस्तुएँ पाई जाती हैं, मनुष्य स्वाभाविकत: उससे जुड़ जाता है, जैसे— खड़खड़ी, पत्थर या धातु के टुकड़े, बाँस से निकली ध्वनि, वाद्य यंत्र के चमड़े इत्यादि। दो वस्तुओं के आघात से निकली ध्वनि जब लयात्मक बनाई जाती है तो वह अवनद्ध वाद्य की ओर संकेत करता है।

तमिलनाडु

पञ्चमुख वाद्य— यह पाँच मुखों वाला वाद्य है। इसकी ध्वनि मृदंगम् से मिलती-जुलती है। पाँचों मुख चमड़े से मढ़े जाते हैं। इसका शरीर मिट्टी का बना होता है।

चित्र (क) – पञ्चमुख वाद्य

आन्ध्र प्रदेश

पम्बई— दो बेलनाकार अवनद्ध वाद्य— ये करीब एक फुट लंबे वाद्य होते हैं जो एक के ऊपर एक रखकर एक साथ बाँधे जाते हैं। इन दोनों भागों को कमर से बाँधकर खड़े होकर बजाया जाता है। ऊपर वाला वाद्य काँसे का होता है, जिसके दाहिने मुख पर डंडे से बजाते हैं और नीचे वाला वाद्य लकड़ी का होता है जो हाथ से बजाया जाता है। धातु एवं लकड़ी की आवाज़ का सम्मिश्रण इसे मधुर बनाता है।

चित्र (ख) – पम्बई

पंजाब

डफ, चंग और घेरा— संस्कृत ग्रंथों में इसे 'पटह' कहा गया है। धातु का छिलका या लचीली लकड़ी को साँचे में ढालकर और गोल आकार में बकरे, बैल या भेड़ की झिल्ली से ढककर ये यंत्र बनाए जाते हैं। ये हाथों और डंडे, दोनों से बजाए जाते हैं। जिसका व्यास बड़ा होता है वह 'डफली' कहलाता है। चंग, डफ से छोटा होता है। लकड़ी या धातु की एक गोलाकार पट्टी में चमड़े को मढ़कर इसे बनाया जाता है। इसे बनाने में बकरी, भैंस या भेड़िया की खाल का प्रयोग होता है। होली के त्यौहार में राजस्थान, हरियाणा और उत्तर प्रदेश में डफ बजाए जाते हैं।

विभिन्न क्षेत्रों में यह विभिन्न नाम से जाना जाता है, जैसे

डफ— पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र (8–80 सेमी.)

डम्फला, देउरा, डप्पू— महाराष्ट्र

चेंगु— ओडिशा

चंग— राजस्थान (60 सेमी.)

डफल— हिमाचल प्रदेश (50–60 सेमी.)

चित्र (ग) – डफ

पश्चिम बंगाल

खोल— भक्ति संगीत, जैसे— कीर्तन में यह वाद्य बजाने की प्रथा है। इसे लिटाकर, गोद में लेकर बजाया जाता है और कभी-कभी गले में लटकाकर भी बजाने की प्रथा है। इसका ढाँचा पकी हुई मिट्टी से बना होता है और इसकी लंबाई 10 से 12 इंच की होती है। दोनों तरफ़ के मुँह चमड़े से मढ़े होते हैं। दाहिने मुँह का व्यास करीब सात इंच का होता है और बायाँ मुँह करीब दो से सात इंच का होता है। इसमें पखावज के बोल ही बजाए जाते हैं। उत्तर पूर्व क्षेत्र एवं पूर्वी क्षेत्र में यह वाद्य यंत्र काफ़ी प्रचलित हैं।

चित्र (घ) – खोल

महाराष्ट्र

निम्नलिखित वाद्य एक जैसे हैं, लेकिन उनके प्रादेशिक नाम भिन्न हैं—

घुमाटे— कर्नाटक

बर्रा— आंध्र प्रदेश

© NCERT not to be republished

जमूक्कू— तमिलनाडु
घूमट— गोवा, महाराष्ट्र

चित्र (ङ) – घुमाटे/बर्रा/जमूक्कू/घूमट

कर्नाटक में घुमाटे नामक यंत्र एक मिट्टी का बर्तन है। यह गोलाकार है एवं इसकी गरदन सुराही जैसी होती है। घुमट जो गोवा और महाराष्ट्र में कलाकारों द्वारा बजाई जाती है। यह एक पकी हुई मिट्टी का बना मटका है, जिसका मुँह बकरे की खाल से मड़ा जाता है। सूर्य की गर्मी से एवं आग की गर्मी देकर इस खाल को सख्त किया जाता है। उसके बाद एक लेप लगाकर इसकी ध्वनि को अलग-अलग तरह से बनाया जाता है। अलग-अलग श्रुति के स्वर भी ऐसे ही सुनने को मिलते हैं। गोवा में घूमट के साथ सेमल नाम का एक और वाद्य यंत्र बजाने की परंपरा है। सेमल या शेमल लकड़ी का बना होता है जिसके मुख पर भी बकरी की खाल मढ़ी होती है।

जम्मू कश्मीर

चित्र च– तुम्बकनरी

तुम्बकनरी— यह जम्मू कश्मीर में प्रचलित लोक कलाओं में पाई जाती है। इसका ऊपरी भाग मटके जैसा प्रतीत होता है जिसका मुँह चमड़े से मढ़ा होता है। नीचे वाला भाग आयताकार स्टैंड जैसा है जो लम्बा, ऊपर सँकरा, नीचे चौड़ा और खुला होता है। देखने से प्रतीत होता है कि कोई मटकी स्टैंड पर रखी है। 'इरान के तुम्बक' वाद्य यंत्र से इसकी सामान्यता पाई जाती है। यह गोद में खड़ी करके बजाई जाती है। ऊपर के चमड़े से मढ़े हुए भाग को अँगुलियों से बजाते हैं और निचले अंश पर खुले भाग को हथेली से बजाया जाता है।

मणिपुर

पुंग— यह मणिपुर और त्रिपुरा का खास अवनद्ध वाद्य है। खोल की तरह प्रतीत होने के बावजूद इसकी बनावट भिन्न होने के कारण ध्वनि अलग है। यह लकड़ी का बना होता है, बीच का भाग चौड़ा होता है और दाहिने एवं बायें की ओर इसके दोनों मुँह खुले होते हैं जो चमड़े से मढ़ी जाती है।

दाहिना मुँह बायें की अपेक्षा ज़्यादा बड़ा होता है। इस पर बहुत कसकर चमड़े की पतली रस्सियाँ बाँधी जाती हैं। इसे रस्सी से गले में लटकाकर या नीचे रखकर हाथों से बजाया जाता है। मणिपुर का मशहूर नृत्य पुंग चोलम है, जिसे प्रस्तुत करते समय इसे गले में लटकाकर नाचा जाता है। पुंग से नृत्य करने वाले, लय का एक मनोरम दृश्य दर्शाते हैं।

चित्र (घ) – पुंग

गुजरात

सरिंदा/सुरिंदा/सुरंदा— इसे बजाने का ढंग बिलकुल सारंगी जैसा है, लेकिन यह देखने में भिन्न है। इसका तुम्बा नीचे की तरफ़ होता है और डाँड जिस पर तार बिछाए जाते हैं, कंधों के सहारे रखा जाता है। गज से ही तारों पर रगड़कर इसे बजाया जाता है। तुम्बा खोखला और चमड़े से मढ़ा होता है। तीन मुख्य तार होते हैं जो अलग-अलग स्वर में बाँधे जाते हैं। इसमें भी छह तार हैं। बंगाल, त्रिपुरा, असम और हिमाचल प्रदेश में यह सरिंदा नाम से प्रचलित है।

चित्र (ज) – सरिंदा

पाठ्यपुस्तक में प्रयुक्त हुए कुछ विशेष शब्द

नीलाम्बरी रागम्	प्लुत-3 मात्रा	उदात्त	पण
तमबट्टम	आदिताल	अनुदात्त	केल्वि
कृष्णनाट्टम	सम/विषम पदीताल	स्वरित	तरंगम्
ललित कला	आवर्त	साम	चतुर्विध वर्गीकरण
इसइ	विसर्जितम	गांधर्व वेद	मिज़राब
आंकिक	सीर	पञ्चमरबु	महती वीणा
ऊर्ध्वमुखी	अलुकु	मणिमेखलइ	मृत्तिका
त्रिपुष्कर वाद्य	फ़र्द	तोल्काप्पियम्	तविल
जाति और प्रबंध	सोरू	संगम्	पुलिका
पक्ष वाद्य	धामा (तबले का बायाँ)	तल्लपाक	किनार की बाज

© NCERT not to be republished

परिशिष्ट 2

तबला एवं पखावज वाद्यों के प्रमुख कलाकार

अनिन्दो चैटर्जी

चित्र (झ) – अनिन्दो चैटर्जी

अनिन्दो चैटर्जी का जन्म 1954 में, पश्चिम बंगाल में स्थित बाराशात नामक स्थान पर हुआ। यह फ़रूखाबाद, पंजाब, लखनऊ घरानों के प्रतिनिधि माने जाते हैं। ज्ञान प्रकाश घोष एवं उस्ताद अफ़ाक हुसैन खाँ से उन्होंने तबले की शिक्षा प्राप्त की थी। उन्होंने संगीत गायन एवं वादन में तबले के अतिरिक्त सितार की भी शिक्षा प्राप्त की है। रविन्द्र भारतीय विश्वविद्यालय और भारतीय विद्या भवन लंदन में शिक्षक भी रहे। संगीत के श्रेष्ठ कलाकारों के साथ उन्होंने संगत की है एवं एकल तबला वादन की भी अनेक प्रस्तुतियाँ दी हैं। यूरोप, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया में अनेक स्थानों पर उन्होंने अपनी प्रस्तुति के द्वारा लोगों का मन मोह लिया है। सन् 2002 में, इन्हें संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार भी प्राप्त हुआ है।

कन्ठे महाराज

चित्र (ञ) – कन्ठे महाराज

वर्ष 1879 के 15 सितम्बर को इस महान तबला वादक का जन्म हुआ। बनारस घराने के प्रतिनिधि कन्ठे महाराज ने पंडित बालदेऊ सहाईजी एवं पंडित राम सहाय से संगीत की शिक्षा प्राप्त की थी। संगीत जगत में इनका नाम आज भी बहुत सम्मान से लिया जाता है। लयकारी के मार्तन्ड कन्ठे महाराज ने भारत के विख्यात संगीतकारों के साथ तबले पर संगति की एवं संगीत सम्मेलनों में बहुत ख्याति प्राप्त की। एकल वादन में इनकी लयकारी की चमत्कारिता एवं बोल और कायदे की पेशकश आज भी संगीतज्ञों में चर्चा का विषय है। इन्होंने किशन महाराज जैसे शिष्यों को संगीत शिक्षा प्रदान की थी। संगीत नाटक अकादमी ने भी इन्हें पुरस्कृत किया।

शंकर घोष

चित्र (ट) – शंकर घोष

शंकर घोष का जन्म 1935 में हुआ। इन्हें तबले की शिक्षा अनन्त बोस एवं ज्ञान प्रकाश घोष से मिली थी। इन्होंने अपनी ही एक शैली बनाई है जिसमें फ़रूखाबाद, बनारस, पंजाब एवं लखनऊ के बाज समाहित हैं। बीसवीं एवं इक्कीसवीं शताब्दी के महान तबला विद्वानों में इन्होंने गायन, वादन एवं

© NCERT not to be republished

नृत्य, तीनों के साथ संगति में कुशलता पाई है। क्रियात्मक एवं महत्वपूर्ण तकनीक द्वारा इन्होंने तबला वाद्य को बजाने के असंख्य तरीके अपनाए एवं शिष्यों को भी ज्ञान बाँटा। वर्ष 2000 में इन्हें संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

लालजी रघुनाथ गोखले

चित्र (ठ) – लालजी रघुनाथ गोखले

तबले में महारत हासिल करने वाले लालजी रघुनाथ गोखले का जन्म 1919 में हुआ। ये रत्नागिरी, महाराष्ट्र के निवासी थे। इन्होंने तबला शास्त्र में शिक्षा अहमद जान थिरकवा के सानिध्य में प्राप्त की। इनकी वादन शैली में फ़र्रूखाबाद, अजराढ़ा एवं दिल्ली घराने की खूबियाँ पाई गई हैं। ये ऑल इंडिया रेडियो में तीस साल और प्रभात फ़िल्म कंपनी में दस साल कार्यरत रहे। इसके उपरांत भारत के सर्वश्रेष्ठ गायकों एवं वादकों के साथ संगत करके इन्होंने मूल्यवान योगदान दिया। तबला वाद्य में अपना योगदान देने के कारण वर्ष 1997 में संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार से विभूषित हुए।

सुरेश तलवलकर

चित्र (ड) – सुरेश तलवलकर

सुरेश तलवलकर का जन्म 1948 में मुम्बई शहर में हुआ। श्री पन्धारीनाथ नागेशकर और विनायकराव घन्घरेकर से इन्होंने तबला की शिक्षा ग्रहण की थी। रामनद इश्वरन ने इन्हें मृदंगम के सूक्ष्म तत्वों का ज्ञान देकर इनकी कलाकारी को शानदार ऊँचाई पर पहुँचाया। सुरेश तलवलकर ने गजानन बुआ जोशी और निवृत्तिबुआ सरनायक से गायन की भी शिक्षा प्राप्त की थी। तबला वाद्य के गुणी एवं विशेषज्ञ होने के नाते इन्होंने विभिन्न मंचों पर प्रदर्शन कर और सभी विशेष कलाकारों के साथ संगत कर तबले में बजने वाली लयकारी और बोल को बहुत प्रतिष्ठित स्थान पर पहुँचाया है। इन्होंने गुरु-शिष्य परंपरा के अंतर्गत कई छात्रों को शिक्षा दी है। वर्ष 2004 में इन्हें संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार और 1966 में ऑल इंडिया रेडियो से पुरस्कार प्राप्त हुआ। इन्हें पश्चिमी वाद्य यंत्रों के साथ कई परियोजनाओं में शामिल होकर तबला वाद्य को ऊँचाइयों पर पहुँचाने का श्रेय दिया जाता है।

अयोध्या प्रसाद

पखावज के महान वादक अयोध्या प्रसाद का जन्म 1891 में मध्य प्रदेश के दतिया जिले में हुआ। ये कुदऊ सिंह घराने के प्रतिनिधि हैं। पाँच साल की उम्र से इनके पिताजी गया प्रसाद ने इन्हें पखावज वाद्य की शिक्षा देने में निहित किया। अयोध्या प्रसाद विशिष्ट तालों को बजाने

© NCERT not to be republished

एवं घरानेदार प्रथा को बनाए रखने के लिए जाने जाते हैं। यह रामपुर महाराजा के दरबार में गायक रहे और इन्हें तबला विद्यालय चलाने का भी श्रेय प्राप्त है। वर्ष 1967 में इन्हें संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार से नवाज़ा गया और 1966 में भारत सरकार द्वारा पद्मश्री से भी सम्मानित किया गया है।

चित्र (ढ) – अयोध्या प्रसाद

भवानी शंकर कथक

चित्र (ण) – भवानी शंकर कथक

मुम्बई शहर के महान पखावज एवं तबला वादक भवानी शंकर कथक का जन्म 1956 में हुआ। सर्वप्रथम इन्होंने अपने पिता जयपुर घराने के बाबूलाल कथक से पखावज सीखा। इसके उपरांत इन्होंने शिवलाली कथक से भी पखावज की शिक्षा प्राप्त की और अजराढ़ा घराने के विद्वानों से तबले की शिक्षा भी प्राप्त की। बहुत अल्प आयु में ही इन्होंने सितारा देवी जैसे कथक नृत्यांगना के साथ पखावज से संगत कर बहुत ख्याति प्राप्त की। संगीत गायन एवं वादन के महान कलाकार, जैसे— भीमसेन जोशी, हरिप्रसाद चौरसिया, पंडित जसराज इत्यादि के साथ संगत करने का श्रेय भी इन्हें प्राप्त है। भवानी शंकर ढोलक, डफ, तुम्बा, हुडुक्का इत्यादि वाद्य बजाने में भी पारंगत हैं। वर्ष 2003 में संगीत नाटक अकादमी ने इन्हें पुरस्कृत किया। फ़िल्म जगत के लिए भी इन्होंने अनेक रचनाएँ बनाई। भक्ति संगीत में भी इनके कई रिकॉर्ड उपलब्ध हैं। राजस्थान सरकार ने भी इन्हें संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया।

राम आशीष पाठक

राम आशीष पाठक का जन्म 1937 में दरभंगा, बिहार के आमता नामक स्थान पर हुआ। इनके दादा पंडित विष्णुदेव पाठक ने इन्हें पखावज बजाने की शिक्षा दी जो कुदऊ सिंह घराने के प्रतिनिधि थे। राम आशीष पाठक पखावज के साथ-साथ तबला वादन में भी कुशल थे। इन्हें ध्रुपद गायक के साथ कुशल संगत करने का श्रेय प्राप्त है। ये ऑल इंडिया रेडियो और सॉन्ग एण्ड ड्रामा डिवीजन में भी कार्यरत रहे। वर्ष 1995 में इन्हें संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार से नवाज़ा गया। देश-विदेश में इनकी अनेक रिकॉर्डिंग उपलब्ध हैं।

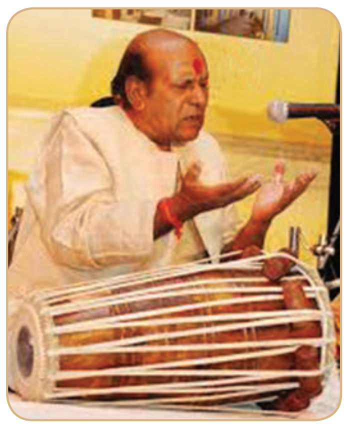

चित्र (त) – राम आशीष पाठक

© NCERT not to be republished

साखाराम तावडे

चित्र (थ) – साखाराम तावडे

साखाराम तावडे का जन्म 1879 में हुआ। पखावज वाद्य बजाने वाले मशहूर कलाकारों में इनकी गिनती होती है। बाला साहब पानसे और शंकर भैया इनके गुरु थे। ग्वालियर के राज दरबार में ये गायक रहे। इसके पश्चात् इन्होंने इंदौर में पखावज सिखाने के लिए विद्यालय की स्थापना कर अनेक शिष्यों को शिक्षा प्रदान की। तबला एवं पखावज, दोनों ही वाद्यों में इन्होंने शिक्षा प्रदान की। लखनऊ के भातखंडे कॉलेज ऑफ़ म्यूज़िक से ये हमेशा जुड़े रहे। इसी संस्था ने इन्हें संगीत में स्नातकोत्तर की डिग्री प्रदान की और इनकी कला को सम्मान दिया। साखाराम तावड़े ने कुछ किताबें भी लिखी हैं।

अल्ला रक्खा खाँ

चित्र (द) – अल्ला रक्खा खाँ

पंजाब घराने के महान तबला वादक उस्ताद अल्ला रक्खा खाँ का जन्म 1915 में पंजाब के रतनगढ़ जनपद के गुरदासपुर में एक किसान परिवार में हुआ था। इनके पिता हाशिम अली मध्यमवर्गीय किसान थे, जिनका संगीत से कोई संबंध नहीं था। किंतु मामा शौकिया गाना-बजाना किया करते थे और वे ही इनकी प्रेरणा के स्रोत बने। अल्ला रक्खा खाँ जब बहुत छोटे थे, तब भी घर की थालियों पर उनकी अँगुलियाँ थिरकती रहती थीं। बड़े होने पर ये पठानकोट की एक नाटक कंपनी के साथ जुड़ गए। उस नाटक कंपनी में यह भक्त प्रहलाद आदि की भूमिकाएँ निभाते थे और गाना भी गाया करते थे। किंतु प्राण तो तबला में ही बसे हुए थे। अत: पंजाब घराने के एक तबला वादक भाई नासिर (नासिर खाँ) से सीखना शुरू किया। उस्ताद आशिक अली से गाना भी सीखने लगे। लेकिन नाटक कंपनी के लगातार यात्रा पर रहने के कारण सीखने का सिलसिला टूट जाता था। बाद में उसी नाटक कंपनी में काम करने वाले लाल मोहम्मद से ये सीखने लगे। एक बार लाल मोहम्मद ने इनसे कहा कि अगर सचमुच तबला सीखना है तो लाहौर जाकर उस्ताद कादिर बख़्श से सीखो। यही बात भाई नासिर ने भी इनसे कही थी। अत: एक दिन सब कुछ छोड़कर ये लाहौर जाकर उस्ताद कादिर बख़्श के शिष्य बन गए।

उस्ताद अल्ला रक्खा 1936 से 1942 तक दिल्ली और मुंबई के आकाशवाणी केंद्रों में कार्यरत रहे। बाद में मुंबई के राजकमल स्टूडियो से जुड़कर हिंदी और पंजाबी की कई फ़िल्मों का संगीत निर्देशन भी किया। *माँ-बाप*, *मदारी*, *जग्गा*, *सबक*, *आलम आरा*, *घर की लाज*, *सती अनसुय्या* जैसी फ़िल्मों का संगीत इन्होंने ए. आर. कुरैशी नाम से दिया। देश के विभाजन के बाद उस्ताद ने भारत में ही रहकर पंजाब के तबले को एक नया आयाम दिया। 'शेर-ए-पंजाब' कहलाने वाले उस्ताद अल्ला रक्खा के तबले में एक ओर उनका अथक रियाज़ बोलता था तो

© NCERT not to be republished

दूसरी ओर उनका मस्तिष्क। विषम मात्राओं की तालों में भी साधिकार वादन और एक से बढ़कर एक लय के चमत्कारिक प्रयोग इनकी विशेषता थी। खाँ साहब कहते थे कि, 'तबला सुर में बोले तो अच्छी बात है, लेकिन अगर तबले में सुर बोले तो और भी अच्छी बात है।' स्वतंत्र वादन के साथ-साथ स्वर वाद्यों एवं नृत्य की संगति के लिए इनका तबला विशेष पसंद किया गया। यद्यपि इन्होंने गायन की भी संगति की थी। एक ज़माने में पंडित रविशंकर के सितार वादन के साथ इनके तबला वादन ने दुनियाभर में धूम मचा दी थी। आज भारत में पंजाब घराने के तबले का जो अस्तित्व है, वह खाँ साहब के कारण ही है। खाँ साहब उस्ताद अल्ला रक्खा के तीनों पुत्र— पद्मभूषण उस्ताद ज़ाकिर हुसैन, फज़ल कुरैशी और तौफीक़ कुरैशी, संगीत के साथ अत्यंत सक्रियता से जुड़कर विश्वव्यापी कार्य कर रहे हैं। योगेश शमसी और अनुराधा पाल जैसे शिष्य भी परंपरा को आगे बढ़ा रहे हैं। पद्मश्री से अलंकृत खाँ साहब का आकस्मिक निधन हृदय गति रुक जाने के कारण 3 फ़रवरी, 2000 को हुआ।

वाजिद हुसैन खाँ

लखनऊ घराने के खलीफ़ा उस्ताद वाजिद हुसैन खाँ का जन्म् 1906 में लखनऊ में हुआ था। इनके पिता उस्ताद बड़े मुन्ने खाँ लखनऊ घराने के प्रसिद्ध तबला वादक थे, अत: वाजिद हुसैन की शिक्षा-दीक्षा उन्हीं के द्वारा हुई। बाद में पिता के निधन के उपरांत अपने चाचा उस्ताद आबिद हुसैन से भी इन्होंने सीखा। वाजिद हुसैन ने अपने पिता और चाचा द्वारा प्राप्त विद्या को अथक रियाज़ करके सिद्धि प्राप्त की और अपने घराने की परंपरा का खूब विस्तार किया।

चित्र (ध) – वाजिद हुसैन खाँ

कथक नृत्य के साथ-साथ लखनऊ शहर ठुमरी गायन के लिए भी प्रसिद्ध है। अवध (लखनऊ) के अंतिम नवाब वाजिद अली शाह के संरक्षण में कथक नृत्य और ठुमरी का विकास साथ-साथ ही हुआ। तबला वादन की एक नयी शैली भी लखनऊ घराने के नाम से विकसित हुई। इसकी नींव आसिफुद्दौला के शासन काल में ही उस्ताद मोदू खाँ और बख़्श खाँ द्वारा पड़ चुकी थी। उस्ताद वाजिद हुसैन इस वादन शैली के खलीफ़ा माने गए थे। नृत्य का संगीत करते समय जहाँ उनका तबला बादलों की तरह गरजता था, वहीं ठुमरी आदि गायन शैलियों की संगति करते समय उनके तबले से जैसे रस की बूँदे टपकती थीं। लखनऊ घराने का शुद्ध और पारंपरिक वादन करने वाले वाजिद खलीफ़ा के वादन की एक और बड़ी विशेषता थी— रौ वादन। उनका रौ वादन सुनकर ऐसा लगता था जैसे कई भँवरे एक साथ गुँजार कर रहे हों। ठाह, दुगुन में रेला बजाकर जब वे चौगुन में उसकी 'रौ' बनाते थे तो उस 'रौ' का 'रव' सुनते ही बनता था। वृद्धावस्था में भी उनके तबले में वह दम, 'रव' और बल था कि उनका वादन सुनते हुए प्रतीत होता था कि दीवारों से भी तबले की ध्वनि आ रही है।

© NCERT not to be republished

उस्ताद आबिद हुसैन की सुपुत्री काज़मी बेगम विदुषी महिला थीं। उन्हें तबले का अच्छा ज्ञान प्राप्त था। आबिद हुसैन को कोई पुत्र न होने के कारण उनकी कला विद्या की और संपत्ति की भी उत्तराधिकारी वे ही थीं। उस्ताद आबिद हुसैन ने अपनी इस प्रिय पुत्री का निकाह अपने सर्वश्रेष्ठ शिष्य वाजिद हुसैन से किया और उन्हें अपना दामाद बना लिया। वाजिद साहब काफ़ी समय तक कोलकाता में भी रहे और वहाँ भी उन्होंने अपने घराने और बाज का यथेष्ट प्रचार-प्रसार किया। खाँ साहब को कई मान-सम्मान प्राप्त हुए, जिनमें उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार भी शामिल है। खलीफ़ा उस्ताद वाजिद हुसैन खाँ का निधन 24 मई, 1978 को हुआ। इनके शिष्यों में इनके सुपुत्र उस्ताद आफ़ाक हुसैन भी श्रेष्ठ ताबलिक हुए। पंडित सुदर्शन अधिकारी और पंडितकनाई दत्त जैसे शिष्यों ने भी इस परंपरा का खूब प्रचार-प्रसार किया।

© NCERT not to be republished

परिशिष्ट 3

ध्वनि का मस्तिष्क पर प्रभाव

संगीत एक ऐसी कला या विद्या है जिसका माध्यम ध्वनि अथवा नाद है। नाद की दुनिया पर जब हम गहन दृष्टि डालते हैं तो पाते हैं कि ये विभिन्न प्रकार की ध्वनियाँ कभी हमें चौंकाती हैं, कभी दिलचस्पी जगाती हैं, तो कभी अनूठी लगती हैं। कभी मेघ गर्जन की तरह तेज़, तो कभी नर्म मुलायम मखमली घास पर किसी की पदचाप... पक्षियों के कलह और पशुओं के रंभाने की आवाज़ों के साथ कभी फ़ेरी वालों की हाँक लगाती आवाज़ें, तो कभी अनेक मानवीय ध्वनियाँ। नदी की धाराओं की कलकल ध्वनि, पत्तियों की सरसराहट, आकाश से गिरती वर्षा की बूँदों की रिमझिम और इन जैसी अनेक ध्वनियाँ प्रकृति में समाहित हैं और एक संवेदनशील नाद साधक इन सभी में नाद को देखता और अनुभव करता है।

कविवर वर्डसवर्थ ने अपनी कविता (रिटर्न इन मार्च) में ध्वनि को इस प्रकार ध्वनित किया है—

'वहाँ पर्वत मालाओं में प्रसन्नताएँ झूमती हैं।
वहाँ झरनों में जीवन होता है...'

शनै: शनै: इंसान ने प्रकृति की ध्वनियों के आधार पर स्वनिर्मित ध्वनियाँ उत्पन्न करने का रास्ता खोजा और फिर ध्वनि की तारता अर्थात् ऊँचाई-निचाई के आधार पर उन्हें नियोजित किया। सात मुख्य एवं अतिरिक्त स्वरों के बीच एवं इनके संयोजन से ही अनेक संगीत सृजित हुए हैं और होते रहते हैं। यह एक अनंत यात्रा है जिसमें अनेक प्रकार के संगीत की रचना होती है। विभिन्न प्रकार के नादों अथवा स्वरों के संयोजन से जो हार्मनी उत्पन्न होती है, वह संगीत निर्माण का काम करती है। वरन् विभिन्न प्रकार की ध्वनियों के मेल से शोर और ध्वनि प्रदूषण का भी खतरा बना रहता है।

एक उदाहरण के माध्यम से इसे समझने का प्रयास करते हैं— किसी मेले का दृश्य है... विक्रेता और खरीददार ज़ोर-ज़ोर से वस्तुओं का मोल-तोल कर रहे हैं, सर्कस शुरू हो चुका है, जादूगर जादू के नाम पर हाथ की सफ़ाई दिखा रहे हैं, बच्चे दौड़ रहे हैं, ध्वनि विस्तारक यंत्र विभिन्न प्रकार की अस्पष्ट ध्वनियों का विस्तार करके जैसे अपने कर्तव्य का मुस्तैदी से पालन कर रहे हैं। वस्तुत: यह सब संगीत नहीं है, लेकिन इन सभी में सांगीतिक तत्व अवश्य हैं। अगर इन्हें सुनियोजित क्रम में प्रस्तुत किया जाए तो इसे आसानी से समझा जा सकता है। एक संगीतज्ञ इसे सफलतापूर्वक अंजाम देता है। इसी प्रकार कोई नृत्यकार इस मेले में विभिन्न व्यक्तियों के हाव-भाव एवं मुद्राओं का अध्ययन

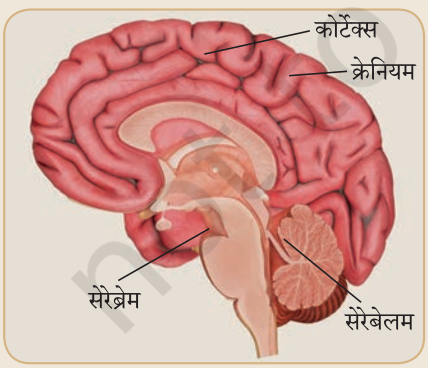

चित्र (न) – मनुष्य मस्तिष्क

करके अपनी नृत्य संरचनाओं में उनका प्रयोग कर सकता है, तो वहाँ की वस्तु स्थिति एवं विभिन्न दृश्यों को केंद्र में रखकर किसी नाटककार द्वारा किसी नाटक की भी रचना की जा सकती है।

ध्वनि की महत्ता ऐसी है कि वह ऊर्जा का एक रूप है, प्रयासों का परिणाम है और सृजन की पृष्ठभूमि है, जो अत्यंत महत्वपूर्ण है। तात्पर्य यह है कि जिन ध्वनियों को हम पहचान पाते हैं, वे प्राकृतिक रूप से आस-पास के वातावरण में फैली होती हैं, जैसे— आँधी-तूफ़ान की आवाज़ें, पत्तियों की सरसराहट, बारिश की रिमझिम, चिड़ियों की चहचहाहट, नदियों का कलकल प्रवाह और पशुओं के रंभाने की आवाज़ें आदि। ये ऊर्जा मानव-मस्तिष्क को प्रकृति में फैली असंख्य आवाज़ों में से किसी आवाज़ विशेष और मानव मस्तिष्क पर पड़े उनके प्रभाव को भी पहचानने में मदद करती हैं। सभी निर्माण कार्य, ऊर्जा की अलग-अलग प्रकार की निरंतरता के ही परिणाम हैं तथा ध्वनि इस ऊर्जा के निरंतर कंपन का मौलिक और बीजभूत रूप है। जैसा कि हम सब जानते हैं कि आनंद प्रदान करने वाली ध्वनि गायन है। दिल की धड़कनें हमें एक-दूसरे से पारस्परिक रूप से जोड़ती हैं।

मस्तिष्क के कंपन की निरंतरता अल्फ़ा, बीटा, डेल्टा और थीटा के आधार पर अलग-अलग होती हैं। जब मस्तिष्क विभिन्न प्रकार की हार्मोनिक ध्वनियों की तारता संगीत के माध्यम से स्पष्ट रूप प्राप्त करता है, तब वह स्थायी तारता मानव मस्तिष्क को समृद्धि प्रदान करते हुए उस पर गहरा प्रभाव भी छोड़ती है।

अर्धगोलक

मानव मस्तिष्क में दो अर्धगोलक होते हैं। प्रथम को प्रबल अथवा प्रधान कहा जा सकता है, तो दूसरा उससे कम प्रबल या अप्रधान होता है, लेकिन ये दोनों ही अर्धगोलक मानव-मस्तिष्क में विभिन्न प्रकार की सूचनाएँ पहुँचाने का काम करते हैं। मानव मस्तिष्क में सूचनाएँ एकत्र करने का एक ही भाग होता है। सामान्यत: अधिकांश लोगों के मस्तिष्क में बाईं ओर स्थित प्रधान अर्धगोलक भाषाई और तार्किक होता है। जबकि मस्तिष्क के दाईं ओर रहने वाला अप्रबल अर्धगोलक, स्थान संबंधी सूचनाएँ देने और अभाषाई प्रक्रियाओं पर केंद्रित होता है।

चित्र (प) – मस्तिष्क के दो भाग

भाषाओं को समझने और उसकी रचना करने की योग्यता हमारे मानवीय अनुभवों का अति आवश्यक अंग है। दिलचस्प बात यह है कि मस्तिष्क में ऐसी गतिविधि की आवश्यकता होती है जिसमें दोनों अर्धगोलक उपयोगी बातों को एक साथ मिलकर समाहित कर सकें।

© NCERT not to be republished

जब शुद्ध आवाज़ अथवा सांगीतिक ध्वनि के उपयोग हेतु अप्रधान अर्धगोलक प्रोत्साहित अथवा उत्तेजित होता है तो बहुधा वह असाधारण स्थिति के प्रति जाग्रत करता है, क्योंकि अप्रभावी अर्धगोलक अंतर्ज्ञान से प्राप्त आवश्यक योग्यताओं से युक्त होता है। इस स्थिति में नाड़ी संबंधी हरकतें हमारे यथार्थ, आंतरिक और बाह्य, दोनों ज्ञान को हमारे नित्य प्रति के अनुभवों से पृथक करती हैं। हमारी सोच-समझ तब अधिक ज़िम्मेदार, स्पष्ट, तीव्र, सूक्ष्म और संस्कारित हो उठती है।

चित्र (फ) – लकड़ी और चमड़ा

चित्र (ब) – धातु

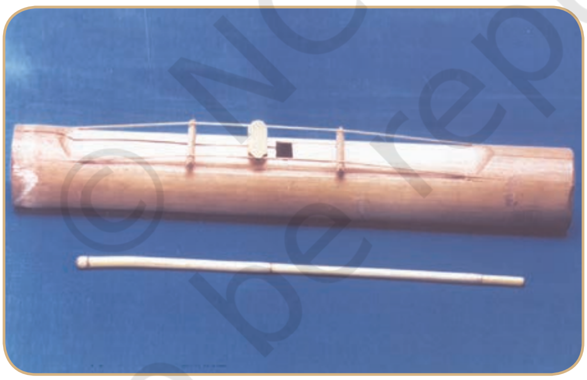

चित्र (भ) – बाँस

चित्र (म) – मिट्टी

ध्वनि का विज्ञान

किसी व्यक्ति के कान 20 से 20 हज़ार हर्ट्ज़ तक की ध्वनि तारता, प्रति सेकंड सुनने की क्षमता रखते हैं। इससे कम की ध्वनि इंफ्रासोनिक और इससे अधिक की ध्वनि अल्ट्रासोनिक कहलाती है। ज्ञातव्य है कि इंफ्रासोनिक की तारता 20 हर्ट्ज़ प्रति सेकंड से कम होती है, जबकि अल्ट्रासोनिक ध्वनि की तारता 20 हज़ार हर्ट्ज़ प्रति सेकंड से अधिक ध्वनि सामान्यत: वायु, जल और काष्ट आदि के माध्यम से तरंगित होते हुए अपनी यात्रा तय करती है। दरअसल, ध्वनि को अपने

© NCERT not to be republished

अस्तित्व के विस्तार के लिए किसी न किसी माध्यम की आवश्यकता पड़ती ही है, क्योंकि शून्य से कोई ध्वनि नहीं पैदा होती। ध्वनि, ठोस पदार्थ, तरल पदार्थ और वायु में अलग-अलग तरह से क्रियान्वित होती है। यहाँ तक कि लचीले, ठोस तथा घने पदार्थों से ध्वनि के गुजरने की प्रक्रिया भी भिन्न-भिन्न होती है। ध्वनि गैस की अपेक्षा ठोस तथा तरल पदार्थों से अधिक तेज़ी से गुज़रती है। इस संदर्भ में यह जानना भी उचित और प्रासंगिक होगा कि अधिकांश भारतीय वाद्य यंत्र सामान्यत: लकड़ी, धातु या मिट्टी अथवा चीनी मिट्टी आदि से बनते हैं। इनमें से अधिकांश वाद्यों में छिद्र एवं सुराख आदि भी होते हैं, ताकि वायु अपनी यात्रा निर्विघ्न तय कर सके। उदाहरण के लिए, मृदंग एवं सरिंदा आदि वाद्यों को देखने से पता चलता है कि इन वाद्यों में ध्वनि तरंगें क्रमबद्ध रूप में दबाव तथा विरल रूप में अपनी यात्रा तय करती हैं।

ध्वनि हर प्रकार के संगीत का आधार तत्व है। संगीतोपयोगी ध्वनि से मानव को एक ईश्वरीय वरदान प्राप्त हुआ। वह न केवल सर्वत्र व्याप्त सृजनात्मकता के गीत गाता है, बल्कि आंतरिक रूप से स्वयं को भी सृजित करने की क्षमता और प्रेरणा देता है। पाइथागोरस तो शून्य के संगीत की भी परिकल्पना करते थे। ध्वनि पर आधारित मौखिक सांगीतिक शिक्षा के विस्तार ने बच्चों कि मानसिकता पर विवेकशीलता की गहरी छाप छोड़ी है।

किसी शिशु की शिक्षा का प्रारंभिक चरण अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। शिक्षा के आधारभूत तत्व इसी समय बच्चों के मस्तिष्क में पनपते हैं। इनका स्थान कितना महत्वपूर्ण होता है यह इसी से स्पष्ट होता है कि ये मौलिक तत्व बच्चों की भावी शिक्षा पर स्थायी प्रभाव छोड़ते हैं। संगीत को जब आवश्यक तौर पर सकारात्मक रूप में बच्चों को सिखाया जाता है, तब ये बच्चों के मूल शिक्षा ग्रहण में भी सहायक सिद्ध होते हैं। साथ ही अन्य रूपों में भी उनकी मदद करते हैं। बच्चों की श्रवण शक्ति अत्यंत तीव्र होती है। वे ध्वनि के विषय में बहुत ही सजग होते हैं और प्राय: हर शब्द पर ध्यान देते हैं। तभी तो वे किस्से-कहानियों, गुड्डे-गुड़ियों के खेल, नाटक एवं एनिमेशन फ़िल्मों में खूब रुचि लेते हैं। संगीत उनकी सृजन शक्ति में वृद्धि लाता है। संगीत का यह विशेष गुण है कि वह अपने साधकों में एकाग्रता, केन्द्रिभूत सजगता, समन्वय एवं सहभागिता के प्रयास, परिकल्पना, स्मृति और धारणा, शक्ति, आत्मावलोकन अर्थात् अपने अंदर झाँकने की प्रवृत्ति आदि का विकास करता है। इसका प्रभाव तभी से आरंभ हो जाता है जब संगीत की कक्षा में इसकी शिक्षा की शुरुआत होती है, इसलिए इसकी शिक्षा की व्यवस्था आरंभिक चरणों से ही शुरू होनी चाहिए। ध्वनि हमारे बोध और ज्ञान को समृद्ध करती है।

संगीत हर कला के अंदर, प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप में मौजूद होता है। हम इसके प्रभाव का अनुभव बच्चों, शिशुओं में कर सकते हैं जिसकी शाब्दिक व्याख्या नहीं की जा सकती है... जिसे उन्हें सिखाया नहीं जा सकता है। माताएँ हर समय अपने बच्चों के लिए गीत गाती रहती हैं और बच्चों पर उसका असर होता है। ऐसा प्रतीत होता है कि संगीत हमारे जीव विज्ञान की धरोहर का भी एक अंग है। उदाहरण के लिए, इसके दो पहलू हैं, माँ अपने बच्चों के लिए भावनाओं

© NCERT not to be republished

में डूबकर गाती है और संगीत के वे स्वर उसकी रचनात्मकता को बढ़ावा देते हैं। लेकिन, ठीक उसी समय, गीत सुनते हुए बच्चा अपनी समझ और सामर्थ्य के अनुसार उस संगीत पर अपनी प्रतिक्रिया भी देता है। इससे यह सिद्ध होता है कि यह स्थिति वैज्ञानिक रूप से समझ और ज्ञान का विकास करती है। संगीत केवल रचनात्मकता का ही विकास नहीं करता है। बल्कि वह स्वयं के सृजन के लिए आवश्यक तत्वों को भी एकत्र करता है। संगीत के विभिन्न प्रकारों के साथ किए गए प्रयोगों के आधार पर कहा जा सकता है कि यह हमारी समस्याओं का निवारण करते हुए रचनात्मक क्रियाशीलता को भी बढ़ाता है। यह एक अत्यंत सरल, सहज और सुहावना रास्ता है जो सृजनात्मकता के अनुभवों का विकास करते हुए उसमें नित प्रति कुछ न कुछ नया जोड़ता है।

नाद योग

चित्र (य) – बाऊल

नाद योग की जड़ें वेद में हैं। यह अलौकिक ध्वनि कंपन का विज्ञान है। आत्म निरीक्षण करने वाले अद्वैतवाद, एक ब्रह्म के सिद्धांत को मानने वाले और सर्वोच्च अभिज्ञान को जानने वाले संतों-योगियों ने अपने ज्ञान के आधार पर इस रहस्य को उद्घाटित किया है।

नाद योग अति सूक्ष्म दृष्टि रखने वाले लोगों को आंतरिक संगीत और ध्वनि के माध्यम से उस स्थिति में पहुँचाता है, जहाँ केवल मौन तथा शांति का साम्राज्य होता है। फिर वह व्यक्ति सृजन के क्षणों से गुज़रते हुए ईश्वर तक जा पहुँचता है। इस ऊँचाई पर वही व्यक्ति पहुँच पाता है, जिसने साधना के द्वारा आत्मशुद्धि कर ली हो। किसी व्यक्ति को साधना के इस उच्च स्तर में पहुँचाने की क्षमता भारतीय शास्त्रीय संगीत में मौजूद राग, ताल, श्लोक, मंत्र, कीर्तन, गीत एवं भजन आदि में है। इनके अभाव में कोई व्यक्ति स्वयं को नाद योगी के रूप में स्थापित नहीं कर सकता। वह वेदांत के दर्शन को सीख और समझ सकता है। कोई भी व्यक्ति इससे जुड़ सकता है, भले ही वह इसमें प्रशिक्षित हो अथवा नहीं। यही साधना उसे अपने शरीर, मन, भावना और बुद्धि के शुद्धिकरण के मार्ग पर ले जाती है। सृजन का यह रूपांतरण इसलिए होता है, क्योंकि एक व्यक्ति अपने सूक्ष्म आंतरिक ज्ञान और कंपन से इसे कर सकता है।

सृष्टि की सारी गतिविधियाँ कंपन से ही संचालित होती हैं। कंपन अर्थात् ऊर्जा ध्वनि के रूप में विभिन्न रूप में मौजूद रहती है। अत्यंत विशाल और ठोस से लेकर बिल्कुल सूक्ष्म रूप में भी विभिन्न तत्वों से बना एक भौतिक शरीर और एक वरदानी सूक्ष्म शरीर भी वस्तुत: कंपन ही है। प्राणमय कोश के अनुसार ऊर्जा के नियम नाड़ी और चक्र को संचालित करते हैं और जो अधिकांशत: ध्वनि के कंपन से प्रेरित और प्रभावित होते हैं। यही कारण है कि संगीत का हम सभी पर काफ़ी गहरा प्रभाव पड़ता है। कोई व्यक्ति किसी वाद्य पर आघात करता है तो आघात

not to be republished

के फलस्वरूप उत्पन्न कंपन हवा के ज़रिये हमारे कर्ण पटों तक आ पहुँचता है और हम उस वाद्य की ध्वनि का रसास्वादन कर पाते हैं।

नाद योग हमारी शारीरिक प्रक्रिया को परिष्कृत करते हुए लय और स्वरबद्ध करता है। नाड़ियाँ अर्थात् वे सूक्ष्म माध्यम जिनसे हमारे शरीर में ऊर्जा का संचार होता है। शरीर में आवाज़ सर्वश्रेष्ठ साज है। जो वोकल कॉर्डस में कंपन से ध्वनि उत्पन्न करता है। कंपन के माध्यम से वीणा, सारंगी, सितार, गिटार, सरोद, हारमोनियम और तबला आदि बाह्य वाद्यों का हम वादन करते हैं। कोई भी व्यक्ति सुर और ताल की तकनीक को तो सीख सकता है, लेकिन इसका मुख्य उद्देश्य होता है आत्मनिरीक्षण और आत्मरूपांतरण, क्योंकि गायन-वादन से कोई व्यक्ति अपना केंद्रीय बिंदु, एकाग्रता एवं चित्त की लीनता की भावना को प्रबल बनाता है।

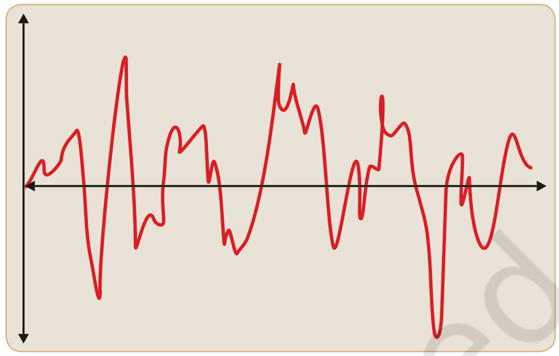

चित्र (र) – ध्वनि कंपन ग्राफ़

चिकित्सा पद्धति के रूप में ध्वनि एवं संगीत

रोग निवारण के लिए ध्वनि और संगीत के उपयोग का सिलसिला मानव सभ्यता के लगभग साथ-साथ ही विकसित हुआ है। इसका लंबा इतिहास है। स्वदेशी एवं प्राकृतिक उपकरणों एवं औषधियों के रूप में मानव की आवाज़, अवनद्ध और घन वाद्य, बाँसुरी तथा आघात एवं घर्षण से बजने वाले अन्य वाद्यों का प्रयोग मस्तिष्क की स्थिति परिवर्तन के लिए करता रहा है। यह अध्ययन हमें यह बताता है कि कुछ निश्चित वादन शैलियाँ मस्तिष्क में थीटा की क्रियाशीलता को बढ़ाती हैं। स्थिति ठीक वैसी होती है जैसी नींद आने के ठीक पहले अथवा नींद खुलने के तुरंत बाद की होती है अर्थात् व्यक्ति न तो पूरी तरह जागृत होता है और न ही पूरी तरह सुप्त। वह तंद्रा अवस्था में होता है। मस्तिष्क की स्वपनावस्था वस्तुत: परिज्ञान और सृजन की अवस्था होती है।

ध्वनियों के नाड़ियों पर पड़ने वाले प्रभाव से यह स्पष्ट होता है कि मस्तिष्क अच्छी ध्वनियों पर उच्च स्तर में अपनी प्रतिक्रिया देता है। पेट (P.E.T.) के अनुसार, शब्द रहित संगीत अथवा ध्वनि जालीदार स्थिति को उत्तेजित करती है और बढ़ाती है, जो सामान्यत: दायीं ओर स्थित अप्रबल अर्धगोलक में होता है।

© NCERT not to be republished

परिशिष्ट 4

दृश्य कला और प्रदर्शन कला पाठ्यक्रम संचालित करने वाले कुछ विश्वविद्यालय

अरुणाचल विश्वविद्यालय, मुख्य परिसर एनएच-52, नमसई, जिला लोहित अरुणाचल प्रदेश 792103 www.arunachaluniversity.ac.in	उस्मानिया विश्वविद्यालय, प्रशासनिक भवन उस्मानिया विश्वविद्यालय परिसर, हैदराबाद आंध्र प्रदेश 500007 www.osmania.ac.in
नेशनल स्कूल ऑफ़ ड्रामा, बहावलपुर हाउस-1 भगवान दास रोड, नयी दिल्ली 110001 www.nsd.gov.in	अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय ललित कला विभाग, ए.एम.यू., अलीगढ़ www.amu.ac.in
उत्कल यूनिवर्सिटी ऑफ़ कल्चर संस्कृति विहार, भुवनेश्वर, ओडिशा 751009 www.uuc.ac.in	एम.सी.एम. डी.ए.वी. कॉलेज फ़ॉर वूमेन सेक्टर– 36 ए, चंडीगढ़ www.mcmdavcw-chd.edu
कालीकट विश्वविद्यालय मलप्पुरम, केरल 673635 www.universityofcalicut.info	कल्याणी विश्वविद्यालय कल्याणी, नदिया, पश्चिम बंगाल 741235 www.klyuniv.ac.in
इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय खैरागढ़, छत्तीसगढ़ 491881 www.iksv.ac.in	कॉलेज ऑफ़ आर्ट्स, दिल्ली विश्वविद्यालय तिलक मार्ग, नयी दिल्ली 110001 www.colart.delhigovt.nic.in
डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद www.bamu.ac.in	दिल्ली विश्वविद्यालय, संगीत और ललित कला संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली 110007 www.du.ac.in
डी.डी.यू. गोरखपुर विश्वविद्यालय सिविल लाइंस, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश 273009 www.ddugorakhpuruniversity.in	पंजाब विश्वविद्यालय सेक्टर 14, चंडीगढ़ 160014 www.puchd.ac.in
मगध विश्वविद्यालय बोधगया, बिहार, 824234 www.magadhuniversity.ac.in	मैसूरु विश्वविद्यालय जे.एल.बी. रोड, मैसूर, कर्नाटक 570005 www.uni-mysore.ac.in

© NCERT not to be republished

नेशनल स्कूल ऑफ़ ड्रामा नज़रूल कलाक्षेत्र कॉम्प्लेक्स उत्तर बनलपुर, अगरतला, त्रिपुरा 799007 www.tripura.nsd.gov.in	हैदराबाद विश्वविद्यालय सेंट्रल यूनिवर्सिटी रोड, पी.ओ. गचीबोव्ली हैदराबाद, तेलंगाना 500046 www.uohyd.ac.in
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय कला और सौंदर्यशास्त्र विद्यालय, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली 110067 www.jnu.ac.in	नेशनल स्कूल ऑफ़ ड्रामा, सिक्किम थिएटर ट्रेनिंग सेंटर, नेपाली साहित्य परिषद भवन विकास क्षेत्र, गंगटोक www.sikkim.nsd.gov.in
छत्रपति साहुजी महाराज विश्वविद्यालय कानपुर, उत्तर प्रदेश www.kanpuruniversity.org	महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय गांधी हिल्स, वर्धा, महाराष्ट्र 442001 www.hindivishwa.org
दयालबाग शिक्षण संस्थान दयालबाग, आगरा, उत्तर प्रदेश 282005 www.dei.ac.in	विश्व भारती शांति निकेतन पो.ओ. शांतिनिकेतन, पश्चिम बंगाल, 731235 www.visvabharati.ac.in
राजा मानसिंह तोमर, संगीत और कला विश्वविद्यालय, ग्वालियर, मध्य प्रदेश www.rmtmusicandartsuniversity.com	मणिपुर विश्वविद्यालय, भारत-म्यांमार रोड कैनचिपुर, इंफाल, मणिपुर 795003 www.manipuruniv.ac.in
सावित्री बाई फूले, पुणे विश्वविद्यालय गणेश खिडं, पुणे, महाराष्ट्र 411007 www.unipune.ac.in	स्टेला मैरिज कॉलेज 17, कैथेड्रल रोड चेन्नई 600086 www.stellamariscollege.org
महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ वाराणसी, उत्तर प्रदेश 221002 www.mgkvp.ac.in	बर्दवान विश्वविद्यालय राजबाती, बर्दवान, पश्चिम बंगाल 713104 www.buruniv.ac.in
एम. एस. यूनिवर्सिटी ऑफ़ बड़ौदा प्रतापगंज, वड़ोदरा गुजरात, 390002 www.msubaroda.ac.in	पांडिचेरी विश्वविद्यालय, प्रदर्शन कला विभाग स्कूल ऑफ़ परफ़ॉर्मिंग आर्ट्स पुडुचेरी 605014 www.pondiuni.edu.in
डॉ. भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय पालीवाल पार्क, पार्क रोड, आगरा उत्तर प्रदेश 282004 www.dbrau.org.in	महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखंड विश्वविद्यालय पीलीभीत बायपास रोड, बरेली उत्तर प्रदेश 243006 www.mjpru.ac.in

© NCERT not to be republished

बनारस हिंदू विश्वविद्यालय वाराणसी, उत्तर प्रदेश 221005 www.bhu.ac.in	फर्ग्यूसन कॉलेज, एफ़. सी. रोड पुणे 411004 www.fergusson.edu
बनस्थली विश्वविद्यालय, बनस्थली विद्यापीठ ललित कला बनस्थली, राजस्थान 304022 www.banasthali.org	भारतीदासन विश्वविद्यालय, पल्का लैपेरूर तिरुचिरापल्ली, तमिलनाडु 620024 www.bdu.ac.in
महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय दिल्ली रोड, रोहतक हरियाणा 124001 www.mdurohtak.ac.in, www.mdu.ac.in	इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय स्कूल ऑफ़ परफ़ॉर्मिंग एंड विज़ुअल आर्ट्स ब्लॉक बी, अंबेडकर भवन, शैक्षणिक परिसर नयी दिल्ली 110068 www.ignou.ac.in
रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालय एमेरल्ड बोवर कैंपस, 56 ए, बी.टी. सड़क, कोलकाता 700050 जोरासंको कैंपस, 6/4, द्वारकानाथ टैगोर लेन, कोलकाता 700007 www.rbu.ac.in	

© NCERT not to be republished

चित्र आभार

संगीत नाटक अकादेमी, नयी दिल्ली – चित्र अ, उ, 1.3, 1.6, 2.3, 2.5, 3.4, 3.5, 4.4, 4.5, 4.6, 4.7, 5.1, 7.1, 7.2, 7.3, 7.10, 7.11, 7.9, 7.13, 7.20, क, ख, ग, घ, ङ, च, छ, ज, झ, ञ, ट, ठ, ड, न, ण, त, थ, द, ध, फ, भ, ब

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र IGNCA – चित्र आ, इ, 7.5

कला उत्सव, सी आई ई टी, रा.शै.अ.प्र.प. — चित्र इ, ई, औ, 1.1, 1.2, 1.4, 4.2, 7.6, 7.8, 7.12, 7.15, 7.17, 7.18, 7.19, म

शर्बरी बैनर्जी– चित्र ऊ, ऐ, ओ, 2.2, 4.1, 7.4, 7.7, 7.14, 7.16, 7.23, 7.24, 7.25, य

अजय पाठक– चित्र 4.8

अमित मिश्रा – चित्र 2.1, 7.21, 7.23

पं. विजय शंकर मिश्रा– चित्र 7.26, 8.1, न, प, र

प. मोहन शर्मा (कलाकार)– चित्र 2.4

अनुराधा पाल (कलाकार)– चित्र 4.3

https://en.wikipedia.org/wiki/Sambandar Sambandar (Wooden Image), ASI Museum, Vellore – 1.5

क्रियेटिव कॉमन्स ; 1.84, 1.85

https://www.google.com/search?q=images+of+brain+creative+commons&rlz=1C1CHBF_enIN873IN873&tbm=isch&source=iu&ictx=1&fir=85-cbTv8jirbJM%252CPVq_OS4tXeXwqM%252C_&vet=1&usg=AI4_-kS2-aWvZ3sTz6t2262IBIpmOHrcww&sa=X&ved=2ahUKEwj83qawzPPwAhWQ8HMBHe58BIYQ9QF6BAgKEAE#imgrc=85-cbTv8jirbJM

© NCERT not to be republished

टिप्पणी

© NCERT
not to be republished